The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 5 | May 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

मुंडा आदिवासी सरना धर्म में सोसो बोंङा का महत्व: जिला खूँटी, प्रखण्ड मुरहू, बालो गाँव के संदर्भ में: एक मानवशास्त्रीय अध्ययन

दुलारी सुमन ढोडराय
शोधार्थी, मानव विज्ञान विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची (झारखंड)
ईमेल आईडी – sumandulari12@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.20699420

ARTICLE DETAILS

Research Paper
Accepted: 26-05-2026
Published: 10-06-2026

Keywords:
सोसो बोंङा, मुंडा, सरना धर्म, रुढ़ि परंपरा, सामाजिक-सांस्कृतिकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण, मानवशास्त्र

ABSTRACT

सोसो बोंङा : सोसो बोंङा मुण्डारी भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है भेलवा पूजा। आदिवासी मुंडा समाज रुढ़ि परंपरा में सोसो बोंङा (भेलवा पूजा) एक मुख्य व महत्वपूर्ण पूजा अनुष्ठान है। यह पूजा अच्छी कृषि और वर्षा, भूमि की उर्वरता, गाँव, परिवार की सुख-शांति और पूर्वजों के सम्मान में किया जाता है। पूजा अनुष्ठान धान रोपनी के ठीक बाद करम महोत्सव के आस-पास अगस्त-सितंबर महीना में सभी मुंडा सरना (आदि धर्म, आदिवासी धर्म,) समाज के लोग अपने-अपने घरों में करते हैं। पूजा गाँव के पाहन (मुं. पाहांड़ां) व अन्य स्थानीय पुजारी के द्वारा पूर्ण की जाती है। अब समय के साथ पूजा विधि में परिवर्तन हो रहे हैं। परिवर्तन का एक कारण धार्मिक व सामाजिक-सांस्कृतिकरण तथा शहरीकरण व आधुनिकीकरण का प्रभाव भी है। जिसके कारण बहुत से लोग अपनी रुढ़ि परंपरा में निहित विशेषताओं व महत्व को छोड़ते, भूलते जा रहे हैं। वर्तमान समय में नई पीढ़ी व समाज को इन परम्पराओं की महत्व को जानने व समझने की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में सोसो बोंङा की अवधारणा का मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है की सोसो बोंङा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मुंडा सरना समाज की सामूहिक चेतना, सांस्कृतिक पहचान और पारिस्थितिक ज्ञान का वाहक है।

परिचय : आदि काल से भारत में कई आदिवासी समुदाय निवास करती हैं इनमें से मुंडा आदिवासी समुदाय भी एक है। भारतीय आदिवासी मुंडा समाज की धार्मिक परम्पराएं केवल आस्था का विषय नहीं है, बल्कि वे प्रकृति, समाज, इतिहास और सामुदायिक जीवन के गहरे संबंधों को भी व्यक्त करती है। झारखंड, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, उड़ीसा में निवास करने वाली मुंडा आदिवासी की सांस्कृतिक पहचान का आधार उनका सरना, आदि धर्म है। इस धर्म में प्रकृति-पूजा, पूर्वज-पूजा तथा विभिन्न बोंङा की उपासना का विशेष महत्व है।

मुंडा आदिवासी समुदाय का मुख्य निवास स्थान झारखंड है, झारखंड के अलावे उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्य-प्रदेश, बंगाल, असम व अंडमान-निकोबार आदि स्थानों पर भी निवास करती हैं। इनकी अपनी अलग धार्मिक, सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताएं होती हैं। आदिवासी समाज में पूजा की शुरुआत मानव सभ्यता के साथ ही प्रकृति (पेड़-पौधे, जल-जंगल, पहाड़-नदी, धरती-आकाश) और अपने पूर्वजों के सम्मान से होती है। जिसमें परम्पराओं के अनुसार पाहन या कोई स्थानीय पुजारियों की अहम भूमिका होती है। मुंडा आदिवासी सरना समाज में पूजा की पद्धति प्रकृति और संस्कृति से गहराई से जुड़ी हुई है।

मुंडा आदिवासी भारत की प्रमुख जनजाति समुदाय में से एक है। यह झारखंड की तीसरी बड़ी जनजाति है। जिसकी जनसंख्या सन् 2011 की जनगणना के अनुसार झारखंड में लगभग 12.29 लाख है। इनका भौगोलिक विस्तार खूंटी, रांची, लोहरदगा, रामगढ़, पश्चिमी व पूर्वी सिंहभूम, चतरा, गुमला, सिमडेगा, पलामू, हजारीबाग, गढ़वा, एवं झारखंड के अन्य जिलों में है। मुंडा जनजाति झारखंड में कोलेरियन समूह की सशक्त एवं शक्तिशाली जनजाति है। प्रजातीय दृष्टिकोण से मुंडाओं को प्रोटो ऑस्ट्रोलॉयड समूह के अंतर्गत रखा जाता है। इनका रंग गहरा भूरा-सांवला या काला, कद मध्यम, कपाल लंबा, नाक मध्यम या चौड़ा, बाल काला व सीधा या लहरदार, होंठ मध्यम मोटा तथा शरीर सुडौल एवं पुष्ट होता है।

मुंडाओं की अपनी भाषा होती है, मुंडा लोग इसे होड़ो जगर कहते हैं। जिसे हिन्दी में मुण्डारी कहते हैं। यह भाषा ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा-परिवार के अंतर्गत आती है। मुंडा लोग अपने-आपको “होड़ोको” अर्थात इंसान कहते हैं। मुंडा शब्द से अभिप्राय सम्पन्न व्यक्ति, गाँव के मुख्य या प्रधान से है।

मुंडा आदिवासी सरना धर्म: मुंडा आदिवासी का पारंपरिक प्रकृति-आधारित धर्म है। “सरना” शब्द का अर्थ पवित्र उपवन से है जहां मुंडा सरना समुदाय के लोग अपने विभिन्न देवी-देवता और प्रकृति शक्तियों की आराधना करते हैं। सरना धर्म पूरे ब्रह्मांड में विद्यमान अदृश्य शक्ति, प्रकृति और अपने पूर्वजों की आराधना पर आधारित है। इसमें पृथ्वी, जल-जंगल, पहाड़, आकाश, सूर्य, चंद्रमा तथा अन्य प्राकृतिक शक्तियों को पवित्र माना जाता है। मुंडा सरना धर्म प्रकृति और आध्यात्मिक शक्तियों के मध्य संतुलन स्थापित करने वाली धार्मिक प्रणाली है।

सरना धर्म का धार्मिक पूजा स्थान सरना स्थल, जायर स्थल या जाहेर स्थल है। जहां मुख्यत: सखुआ/साल वृक्षों का समूह होता है। यहाँ गाँव के लोग सामूहिक में पाहन द्वारा अलग-अलग समय पर गाँव की समृद्धि, सुख-शांति और सुरक्षा के लिए पूजा-पाठ सम्पन्न किया जाता है। सरना स्थल को बोंडाओं का निवास स्थान माना जाता है। इसलिए इन क्षेत्रों के वृक्षों को काटना या नष्ट करना वर्जित माना जाता है। जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण संरक्षण की एक पारंपरिक व्यवस्था विकसित होती है।

बोंङा: बोंङा शब्द मुण्डारी भाषा का शब्द है जिसका तात्पर्य प्रकृति में विद्यमान अलौकिक/अदृश्य शक्ति से है। मुंडा समाज की मान्यता के अनुसार संसार में दृश्य और अदृश्य दोनों प्रकार की शक्तियां विद्यमान हैं। ये शक्तियां संसार में विद्यमान सभी सजीव-निर्जीव पदार्थ प्रकृति, जंगल-पहाड़, नदी-नाले, जल-थल, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी तथा मानव जीवन से जुड़ी होती है। इन्हीं बोंङाओं में सोसो बोंङा भी एक महत्वपूर्ण धार्मिक-सांस्कृतिक पूजा अनुष्ठान पद्धति है।

सोसो बोंङा: सोसो बोंङा एक मुण्डारी शब्द है इसका शाब्दिक अर्थ भेलवा पूजा है। सोसो बोंङा को सामान्यत: परिवार या गाँव की समृद्धि, कृषि व पर्यावरण संरक्षण-संवर्धन तथा सामुदायिक कल्याण से जुड़ी शक्ति माना जाता है। कुछ मानवशास्त्रियों ने इसे उन्नत कृषि और भूमि की उर्वरता से संबंधित आत्मा के रूप में भी वर्णित किए हैं। मुंडा सरना समाज में यह मत है कि यदि घर में सोसो बोंङा सम्पन्न हुई है और वह प्रसन्न है तो परिवार में सुख-शांति, समृद्धि और स्वास्थ्य जीवन बनी रहती है, वहीं सोसो बोंङा के अप्रसन्न होने पर घर-परिवार में अशांति, दुख:-तकलीफ, बीमारी जैसी समस्याएं उत्पन्न होती है। साथ ही प्राकृतिक शक्तियां अप्रसन्न होने पर फसल नष्ट हो सकती है, रोग फैल सकते हैं तथा अकाल जैसे संकट भी आ सकते हैं। इसलिए सोसो बोंङा की पूजा के द्वारा पूरी समुदाय प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है।

सोसो बोंङा अनुष्ठान धान रोपनी के ठीक बाद करम पूजा के आस-पास अगस्त-सितंबर महीना में सभी मुंडा सरना धर्म के लोग अपने-अपने घरों में अपने परिवार की सुख-शांति, फसल की समृद्धि के लिए गाँव के पाहन या किसी स्थानीय पुजारी के द्वारा पूजा सम्पन्न करते हैं। इसमें भेलवा की डालियों के साथ-साथ सखुआ और केंदु की डालियों को धान खेत के बीच में गाड़ा जाता है विश्वास है कि भेलवा की डालियाँ धान पौधे में लगने वाले रोग व कीड़े से बचाती है। इसके अलावे भेलवा डालि के साथ-साथ सखुआ और केंदु की डालियों को भी खेत के बीच में गाड़ा जाता है खेत के बीच गाड़े इन डालियों में पक्षी आकर बैठतीं हैं, और धान में लगने वाले कीड़े को पक्षी खा जाती हैं। इस विश्वास के पीछे एक वैज्ञानिक कारण भी है, आयुर्विज्ञान में भेलवा के तेल का उपयोग कीट निरोधक के रूप में किया जाता है। मुंडा आदिवासी सरना धर्म में हर शुभ कार्य के समय या बाद में यह अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है।

मुंडा आदिवासी सरना धर्म में सोसो बोंङा का धार्मिक महत्व: सोसो बोंङा के धार्मिक महत्व कृषि उत्पादन में वृद्धि की कामना करना, प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा, महामारी एवं रोगों से बचाव और सामुदायिक पारिवारिक सुख-

समृद्धि की कामना करना प्रमुख है। मुंडा आदिवासी सरना धर्म में सोसो बोंङा अत्यंत महत्वपूर्ण पवित्र मौखिक परंपरा है जो मुंडा समाज के इतिहास, सृष्टि की रचना व सर्वोच्च शक्ति सिङबोंङा की स्तुति का वर्णन करती है। सोसो बोंङा के पारंपरिक सृष्टि-कथा के माध्यम से मुंडा समाज को सृष्टि और मानव उत्पति की जानकारी मिलती है। साथ ही असुर कथा में मुंडा सरना धर्म के सर्वोच्च देवता सिङबोंङा ने असुरों की शक्ति को नियंत्रित किया। असुर कथा में वर्णित असुरों के अत्यधिक लौ गलाने की जिद्द के कारण पर्यावरण में प्रदूषण फैलने से लोगों को कई बीमारियाँ हुई, साथ ही पृथ्वी पर अकाल पड़ने लगा जिससे मानव जीवन में संकट आती है। कथा में सिङबोंङा असुरों के अहंकार, अधर्म पर धर्म की जीत हासिल करते हैं। यह कथा मुंडा सरना समाज को पर्यावरण संरक्षण-संवर्धन के प्रति सजग करती है, और आने वाली पीढ़ी को अपने जीवन में प्रकृति के प्रति प्रेम और अपने अहंकार से दूर रहने के लिए प्रेरित करती है। साथ ही प्रकृति और अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान करना सिखाती है।

मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण:

प्रतीकात्मक मानवशास्त्र के अनुसार धार्मिक प्रतीक समाज सामूहिक मानसिकता को व्यक्त करते हैं। सोसो बोंङा प्रकृति, पूर्वज और समुदाय के बीच संतुलन का प्रतीक है। यह अवधारणा बताती है कि मनुष्य प्रकृति का मालिक नहीं है, बल्कि प्रकृति का एक अंग है। ये विचार आधुनिक पर्यावरणीय विमर्श में अत्यंत प्रासंगिक माना जाता है।

ब्रिटिश मानवशास्त्री E.B.Tylor के अनुसार जीववाद वह विश्वास है जिसमें प्राकृतिक वस्तुओं और घटनाओं में आत्मा या चेतना का अस्तित्व माना जाता है।

मानवशास्त्री ब्रॉनिस्लाव मालिनोव्स्की के कार्यात्मक सिद्धांत के अनुसार धर्म सामाजिक अनिश्चितताओं को नियंत्रित करने का साधन है। इस दृष्टिकोण से सोसो बोंङा की पूजा कृषि-संकट, प्राकृतिक आपदाओं की स्थिति में मानसिक स्थिरता प्रदान करती है।

मानवशस्त्री जूलियन स्टुअर्ट के सांस्कृतिक पारिस्थितिकी सिद्धांत के अनुसार संस्कृति और पर्यावरण के बीच गहरा संबंध होता है। सोसो बोंङा की अवधारणा प्रकृति संरक्षण की भवन को बढ़ावा देती है।

पूर्व में किए गए अध्ययन:

हॉफमैन, जॉन बैप्टिस्ट, (1941) “एनसाइक्लोपीडिया मुण्डारिका” volum xiii इस पुस्तक में मुंडा पारंपरिक सरना धर्म की धार्मिक अनुष्ठान सोसो बोंङा का विस्तृत अध्ययन करते हैं।

विद्यार्थी, ललित प्रसाद और कुमार बिनय राय, (1976) The Tribal Culture Of India इस पुस्तक में भारतीय जनजातीय संस्कृतियों की तुलनात्मक व्याख्या मिलती है यह पुस्तक मुंडा आदिवासी धार्मिक परंपराओं को व्यापक आदिवासी सांस्कृतिक ढाँचे में समझने में सहायता करती है।

मुंडा राम दयाल और मानकी सिंह रतन (2015) "सोसो बोंङा" इस पुस्तक में मुंडा समुदाय की सृष्टि कथा, असुर कथा, प्रकृति-दर्शन तथा मनुष्य और पर्यावरण के संबंधों का विश्लेषण किया गया है। इसमें लेखक सोसो बोंङा को केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि पारिस्थितिकी संतुलन, सामुदायिक स्मृति और आदिवासी दार्शनिक चेतना के रूप में प्रस्तुत किए हैं। यह पुस्तक में मुंडा विश्वदृष्टि के अध्ययन के लिए प्रमुख है।

मुंडा राम दयाल और मानकी सिंह रतन (2009) "आदि धर्म: भारतीय आदिवासीयों की धार्मिक आस्थाएं" भारतीय आदिवासी धर्मों की दार्शनिक संरचना, प्रकृति आधारित आध्यात्मिकता और सामुदायिक धार्मिक जीवन का वर्णन है।

रॉय शरद चंद्र (1912) "The Mundas And Their Country" इस पुस्तक में मुंडाओं के बोंङा विश्वास, धार्मिक पूजा अनुष्ठान, सरना धर्म सोसो बोंङा के समय बोली जाने वाली मुंडा पारंपरिक सृष्टि कथा, असुर कथा का संकलन है।

अध्ययन का महत्व: मुंडा आदिवासी सरना धर्म (आदिवासी धर्म, आदि धर्म) में सोसो बोंङा अनुष्ठान (भेलवा पूजा) में निहित विशेषता व महत्व को समझने व प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है। इसके साथ ही सोसो बोंङा (भेलवा पूजा) अनुष्ठान में पाहन द्वारा मंत्र जाप में कथा के रूप मुंडाओं की सृष्टि कथा, जिसमें सिङबोंङा (सृष्टिकर्ता) द्वारा सृष्टि और मानव का सृजन व विकास और असुर कथा में असुरों और सिङबोंङा के बीच के संघर्ष को मानवविज्ञान की दृष्टिकोण से जानने का प्रयास किया गया है। पूजा अनुष्ठान विधि में आए परिवर्तन के कारण व उसमें हो रहे प्रभाव के कारकों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है। मुंडाओं में सोसो बोंङा (भेलवा पूजा) पूजा अनुष्ठान, आदिवासी धार्मिक दर्शन के साथ इसका एक वैज्ञानिक आधार भी है इसलिए इसका अध्ययन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। और इसलिए इस पूजा अनुष्ठान के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को भी समझने का प्रयास किया गया है।

उद्देश्य (Objective):

1. आदिवासी मुंडा सरना धर्म में सोसो बोंङा (भेलवा पूजा) के महत्व व विशेषता को जानना।
2. पूजा विधि में हो रहे परिवर्तन के कारण व प्रभाव के कारकों को जानना।

शोध प्रविधि:

अध्ययन क्षेत्र: इस शोध अध्ययन के लिए झारखंड राज्य के खूंटी जिला के मुरहू प्रखण्ड के मुंडा सरना बहुल बालो गाँव का चयन कर वहाँ के सरना मुंडा परिवारों को अध्ययन की इकाई मानकर उद्देश्य पूर्ण के लिए किया गया है।

जनसांख्यिकी: बालो गाँव एक आदिवासी मुंडा जनजातीय सरना बहुल गाँव है, जो गनालोया पंचायत के मुरहू ब्लॉक, खूंटी जिला में स्थित है। गाँव की जनसंख्या लगभग 500-600 है, इस गाँव में कुल परिवारों की संख्या लगभग 120 से 125 है। जिसमें से दस गोप परिवार, एक नागवंशी परिवार, ग्यारह ईसाई परिवार, एक लोहार परिवार एवं शेष मुंडा सरना परिवार हैं।

अध्ययन की इकाई: इस अध्ययन में सूचना संकलन के लिए मुख्य रूप से पाहन, पुजारी, घर के मुख्य बुजुर्ग या मुंडा सरना धर्म के धार्मिक आदिवासी दर्शन के जानकारों को शामिल किया गया है।

तथ्य संकलन की तकनीक : प्राथमिक आँकड़े एकत्रित करने के लिए मानव विज्ञान तकनीक जैसे – अवलोकन, सहभागी अवलोकन, अर्द्ध सहभागी अवलोकन, साक्षात्कार, केंद्रित समूह साक्षात्कार, साक्षात्कार अनुसूची, छायाचित्र तकनीक का प्रयोग किया गया है। इसके साथ ही शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए द्वितीयक आँकड़े जैसे – शोध पत्र-पत्रिका, न्यूज पेपर, प्रकाशित तथा अप्रकाशित पीएच०डी० लेख, थीसिस, पुस्तकें आदि का सहारा लिया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं परिचर्चा (Finding and Discussion):

सोसो बोंङा की मुख्य विशेषता:

सोसो बोंङा प्रकृति में विद्यमान अलौकिक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है। यह सरना धर्म की उस धारणा को व्यक्त करता है जिसमें मानव, प्रकृति और आध्यात्मिक शक्ति परस्पर जुड़ी हुई है। सोसो बोंङा का संबंध उत्तम कृषि और कृषि भूमि की उर्वरता, फसल की सुरक्षा से माना जाता है। मुंडा समाज में फसल की अच्छी पैदावार और प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने के लिए यह अनुष्ठान किया जाता है।

सोसो बोंङा अनुष्ठान में उपयुक्त सामग्री: भेलवा पेड़ की टहनियाँ, केंऊंद पेड़ की टहनी, सखुआ पेड़ की टहनी, धान का पौधा, आम पत्ता, आरवा चावल, बेल पत्ता, दूब घास, गोलाईची के फूल, आरवा चावल का आंटा, चूल्हा का मिट्टी, लकड़ी के कोयले का पाउडर, गिली मिट्टी, धुवन, सिंदूर, मुर्गी अण्डा, सखुआ के पत्ते, नए बांस का सूप, मिट्टी के नए घड़े, कांसे की थाली और लोटा।

सामग्री एकात्रित करने की जिम्मेदारी:

पुरुष द्वारा: घर के पुरुष सुबह-सुबह जंगल जाकर भेलवा, केंदु, सखुआ पेड़ की टहनियाँ और आम पत्ता लेकर आते हैं, साथ ही स्नान के बाद धान खेत से धान का पौधा, गिली मिट्टी, बेल पत्ता, दूब घास, गोलाईची के फूल लेते हुए आते हैं।

महिला द्वारा: घर की महिला सुबह-सुबह घर-आँगन की सफाई के बाद उसे गोबर से लिपती हैं। स्नान करने के बाद पूजा में लगने वाले सामग्री एकत्रित करती हैं। जिसमें आरवा चावल, आरवा चावल का आंटा, चूल्हे की मिट्टी, लकड़ी के कोयले का पाउडर, धुवन, सिंदूर, रानु, मुर्गी अण्डा, सखुआ के पत्ते, नए बांस का सूप, मिट्टी के नए घड़े, कांसे की थाली व लोटा। सभी सामग्री एकत्रित होने के बाद दोनों महिला और पुरुष मिलकर पूजा मण्डप में विधिवत सजाकर इन सामग्रियों को रख देते हैं।

पूजा मण्डप घर के बरामदे वाले कमरे में पूर्व से पश्चिम दिशा में बनाया जाता हैं। घर में जैसे ही पाहन का आगमन होता है, उनका अभिवादन 'जोआर' बोलकर करते हुए उसे घर की महिला कांसे की थाली, लोटे में पानी और कटोरी में सरसों का तेल लेकर उनका हाथ और पैर धोती हैं। धोने के बाद पाहन पूजा मण्डप की ओर बढ़ते हुए सभी पूजा सामग्री का मूल्यांकन करते हैं। और कांसे की लोटे में पानी लेकर आम पत्ते से उसके ऊपर जल छिड़कते हैं।

पूजा की तैयारी:

पाहन पूजा स्थान में सबसे पहले चूल्हे की मिट्टी, कोयले की पाउडर और अरवा चावल की आंटे से जमीन में एक अल्पना/चौका बनाते हैं। उसके बाद खेत से लाए गीली मिट्टी से मछली, केकड़ा, कछुआ और केंचुआ की जोड़ी बनाकर उसे चौके के कोणों पर रखते हैं। धरती के बनने में इन जीवों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसलिए इनके सम्मान में मिट्टी की प्रतिमूर्ति बनाई जाती है। मण्डप के ठीक बीच दीवाल से सटे या किनारे की ओर मिट्टी के घड़े या तवा रखकर उसके ऊपर भेलवा, सखुआ, केंउंद की छोटी डालियां आरोपित की जाती है। इन डालियों को पूजा के बाद सुबह-सुबह धान खेत के बीच गाड़ा जाएगा, इस आशा में की इसे धान के पौधे में रोग और कीड़े-मकोड़े से बचे रहेंगे। और यह विश्वास है की भेलवा की पत्तियां धान के पौधे को कीड़ों से बचती है। गाँव के बड़े बुजुर्ग एवं जानकार कहते हैं कि भेलवा की पत्तियों में कीटनाशक गुण होते हैं, जो धान में होने वाले छोटे कीड़े से धान में रोग फैलने का जो डर रहता है, उसे उसकी रक्षा करती है। इसके अलावे अन्य डालियों को भी खेत में गाड़ा जाता है, इस तरह खेत में गड़े रहने से उसके ऊपर चिड़ियाँ आकर बैठतीं हैं और धान में जो कीड़े होते हैं उसे चुग कर खाती हैं। इसे कृषि वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधान में प्रमाणित किया है कि भेलवा में निश्चित मात्रा में कीट निरोधक गुण पाए जाते हैं। इसके अलावे आयुर्वेद में भी भेलवा के तेल को कीट निरोधक के रूप में उपयोग किया जाता है। पूजा प्राय: रात में ही होती है। लेकिन अब लोग सुबह के समय भी कर रहे हैं।

दूसरी बार पाहन पुन: हाथ में लोटे लेकर भेलवा की डालियों पर आम पत्तियों द्वारा पानी छिड़कता है। छिड़कने के बाद सादा सूत के धागे से तीन बार घुमाकर बांधता है। उसमें सिंदूर के टीके लगाते हैं। दीप प्रज्वलित कर, धुवन जलते हैं, उसके बाद थोड़ी चावल जमीन में रखकर उसके ऊपर मुर्गी के अंडे को रखते हैं। अंडे के सहारे ही खसरा लड़के ने असुर के लड़कों के साथ गोली खेलकर उन्हें पराजित किए थे। इसी के सम्मान में अंडे का उपयोग पूजा में करते हैं। इसके बाद पाहन मण्डप के किनारे बैठे श्रोताओं को अरवा चावल बांटते हैं। ये आरव चावल पूजा समाप्त होने के बाद आरोपित डालियों के ऊपर पाहन के कहने पर सभी श्रोतागण छिड़कते हैं। सभी को चावल देने के बाद पाहन अपने स्थान ग्रहण करते हैं, और उसके बाद पूजा आरंभ करते हैं। मंत्र पाठ शुरू करने से पहले पाहन सूप में रखे चावल को हाथ में रखकर गोद में लेकर बैठते हैं, और आँख बंद करके "जय सिङ बोंङा" बोलते हुए हाथ में चावल लेकर थोड़ी मात्रा में चावल को जमीन पर गिरते हुए बाएं हाथ से सूप पकड़े दूसरी हाथ(दाएं) से सूप में रखे चावल के ऊपर धीरे से हाथ फेरते हुए मधुर सुर में मंत्र जाप आरंभ करते हैं। मंत्र जाप के समय कोई वाद्ययंत्र प्रयोग नहीं किए जाते हैं। सूप में रखे चावल के दानों पर हाथ फेरते हुए पूरी लय के साथ मंत्र जाप करते हैं। मंत्र पाठ सर्वप्रथम सिङबोंङा अर्जी (सिङबोंङा की आराधना) से शुरू होती हैं। सिङबोंङा के साथ प्राकृतिक तत्व धरती – आकाश, बादल, सूरज-चांद, तारे, जल-थल, जंगल – पहाड़, नदी – समुंद्र, पेड़ – पौधे, के साथ उसमें रहने वाले सभी छोटे बड़े जीव - जन्तुओं, पशु-पक्षी, की आराधना करते हैं। इसके अलावे धान, गोंदली, मड़ुआ आदि सभी की आराधना की जाती है। मुंडा सरना धर्म में हर पूजा की शुरुआत सिङबोंङा अर्जी से होती है।

सिङबोंङा अर्जी के कुछ सार इस प्रकार से हैं:

हे सिरमारेन सिङबोंङा हे आकाश के परमेश्वर

हे ओतेरेन ओते एंगा हे धरती की धरती माँ

तोआ लेका तुरो: किन दूध जैसे उगने वाले

दहि लेका हासुरो: किन|| दही जैसे डूबने वाले||

आबेनगे मुनु रेन किन आप ही आदि के हो

आबेनगे टुण्डु रेनकिन आप ही अंत के हो

आबेनगे सुबा रेनकिन आप ही मूल के हो

आबेनगे चुटि रेनकिन|| आप ही चोटी के हो||

तिसिङ ने होन कोड़ा: ओड़ा:रे आज इस लड़के के घर में

ने सोसो करम मण्डोअ: रे इस सोसो करम के नीचे

आमगे सिङबोंङा ले अर्जीमे तना आपका ही सिङबोंङा विनती कर रहे हैं

आमगेले गोवारी तना आप को ही पुकार रहे हैं

अमअ: कटा सुबा रे आपके कदमों में

अमअ: उम्बूल रे आपके छत्रछाया में

तिसिङ अले हिजुअ: कना आज हमसब आए हैं

हे सिङबोंङा अलेके होरो-जंगी लेम, हे सिङबोंङा हमारी देख-रेख करो

अमअ: आशीर्वाद ते बुगिन ले ताइनका, आपके आशीर्वाद से अच्छे से रहें

तिसिङ अमले अर्जी- गोआरि जा:मअ: आज आपसे विनती-प्रार्थना कर रहे हैं

जोआर जा:मअ: जोआर कर रहे हैं

जय जय सिङबोंङा जय जय सिङबोंङा

सिङबोंङा अर्जी के बाद पाहन थोड़ी देर श्रोतागण के साथ बातचीत करते हैं, फिर पुन: कथा शुरू करते हैं। कथा के पहला और दूसरे कड़ी में कथावाचक सृष्टि कर्ता सिङबोंङा और आदिमाता की स्थिति के बारे में बताते हैं, कि कैसे धरती के चारों तरफ पानी ही पानी है, पानी के ऊपर पत्ते से बने डोंगी के घर तैर रहा है। लहरों के बीच कांपती आवाज से अपने पति से बातें करती हैं, उसके बाद आदिमाता और सिङबोंङा के बीच आपस में बातचीत होती है। कथा बहुत लंबी है, जिनके कुछ सार पुस्तक “आदि धर्म” के अनुसार इस प्रकार से हैं, आदिमाता अपने प्रथम संगी सिङबोंङा से कहती हैं:

हे मेरे आदि संगी!

तुम जागे भी हो या

आँखें मूँद लिए हो?

एक बात कहना चाहती हूँ,

दो बात बोलना चाहती हूँ,

तुम जरा सुनो,

इसके जवाब में सिङबोंडा कहते हैं:

मैं जग हुआ हूँ, मेरे प्रिय

मैं सोया नहीं हूँ,

तुम जो भी कहना चाहो प्रिय,

तुम जरूर कहो|

जो तुम कहोगी

मैं अवश्य करूंगा

तुम कहो तो सही

जो तुम्हें कहना है||

सृष्टिकथा से अभिप्राय व्यष्टि के ऊपर समष्टिपरकता। आरंभ में सिंङबोङा को अपना अकेलापन खटकने लगता है। व्यक्ति अपने आप में अपूर्ण है, व्यक्ति अपनी जरूरतों की पूर्ति सामूहिकता में रहकर ही पूर्ण करते हैं। मुंडाओं की सृष्टिकथा को जब हम सुनते हैं तो आदि काल में पहले चारों तरफ पानी भरी होती है। और पानी के बीच सिङबोङा और आदिमाता केवल होते हैं, उन्हे उनका अकेलापन अखरने लगता है। और उसी समय दोनों आपस में बातचीत करते हैं और सिङबोङा पानी की गहराई से धरती को बाहर लाने के लिए पानी में रहने वाले जलीय जीव मछली, केकड़ा, कछुआ और केंचुआ से सहायता लेते हैं। इनके सामूहिक प्रयास से धरती की रचना करते हैं। पृथ्वी की रचना के बाद छोटे जीव - जन्तु व वनस्पति का सृजन करते हैं। उसके बाद जमीन से मिट्टी लेकर मानव की दो मूर्ति बनाकर सूखने के लिए धूप में रखते हैं, लेकिन इसी समय एक घोड़ा आकर दोनों मूर्ति को पैर से लात मारकर तोड़ देते हैं। इसे देखकर सिङबोङा ने घोड़े से मूर्ति की रक्षा के लिए दो कुत्ते (चौंरा – भौंरा) को बनाते हैं। और इस तरह ये दोनों मूर्ति की रक्षा करते हैं, जब मूर्ति पूरी तरह सुख जाते हैं, तो सिङबोङा आम के पत्ते से मूर्ति के ऊपर जल छिड़कर उनमें प्राण डाल देते हैं। मुंडा सरना समाज में विश्वास है कि इसी कारण आज भी शुभ कार्य आरंभ करने या किसी स्थान, वस्तु को पवित्र करने के लिए आम पत्ते का उपयोग किया जाता है और इसे पवित्र माना जाता है। आज हर

मुंडा सरना धर्म के लोग हर पूजा अनुष्ठान में सिङबोङा और सिदाएङा (आदिमाता) के बाद लुटकुम हड़म, लुटकुम बुढ़िया के नाम से संबोधित करते हुए प्रार्थना आरंभ करते हैं।

इसके दूसरे चरण में कथावाचक असुर कथा शुरू करते हैं। यह मुंडाओं की पारंपरिक मौखिक लोक कथा है जो मुंडाओं के एक उपसमुदाय जो आदिम जनजातीय (असुर) समूह के अंतर्गत आते हैं उसकी सामाजिक – आर्थिक उत्थान और पत्तन की कहानी को दर्शाती है। दुनिया में जितने भी सभ्यताओं के इतिहास को देखें तो कई उतार-चढ़ाव हुए, जिनके लिखित साक्ष्य मिलते हैं। जिसमें जनसंख्या वृद्धि, प्रदूषण, अग्निवर्षा, प्रलय के द्वारा विनाश और पुन: नई सृष्टि की रचना होती है। प्रस्तुत असुर कथा में असुरों द्वारा लौह उत्पादन औद्योगिकीकरण की अति के कारण सम्पूर्ण सृष्टि, प्रकृति व मानव जीवन के बीच उत्पन्न व्यथा का परित्राण सिंङबोंङा द्वारा उनके संहार के पश्चात सृष्टि में पुन: संतुलन व्यवस्थित कर पूर्ण होती है इस कथा में इसका चित्रण व दर्शन का वर्णन मिलती है।

लोक-कथा में असुरों की बारह कोठियाँ और बाईस भट्ठियाँ दिन-रात चल रहें हैं जिसके कारण पृथ्वी के एक भाग एकासीपीड़ि (मैदान) और तिरासीबदी (सपाट/समतल) क्षेत्र की पुरी भाग में प्रकृति से लेकर जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, हवा, पानी, मिट्टी सभी में जहर घुल जाती है। जिधर देखो उधर लोग मानव व जानवर रोग, भूख-प्यास से परेशान हैं, खेत, नदी, तालाब के फूल, फल, पेड़-पौधे, सभी सूखे बंजर हो गए हैं, घास, पत्ते सभी मुरझा गए, चारों तरफ कुहासा, घने कोहरे और उसके कारण बीमारी फैल रही है। असुरों के इस व्यवहार से नाराज होकर सिङबोङा अपने दूत के रूप में चिड़िया में ढेंचूआं, गिद्ध, कौआ इन तीनों के जोड़े को उनके पास बारी – बारी से भेजकर दिन – रात इस तरह काम न करने की आग्रह करने का संदेश देकर भेजते हैं। दिन – रात काम करने के कारण उनके शरीर को आराम नहीं मिल पाता है और साथ ही पर्यावरण में भी असंतुलन पैदा होती है। दोनों में संतुलन बनाए रखने के लिए एक समय काम करने के बाद एक समय आराम करनी चाहिए। सिङबोङा कहते हैं कि अगर तुमलोग दिन में चपुआ चलाते हो तो रात के समय बंद करने हुंगे, और अगर रात में चपुआ चलाते हो तो दिन में बंद रखना होगा। इसी में सृष्टि का कल्याण है। लेकिन असुर लोग इन दूतों का उपहास उड़ाते हुए उसे मारकर, उनको वापस भेज देते हैं। सिङबोङा के आग्रह के बाद भी असुर लोग अपना लोहा गलाने का काम दिन-रात चालू रखते हैं जिससे देखते ही देखते कुछ ही दिनों में पेड़ के फल, पत्ते, घास, पोखर के कमल, सूख जाते हैं, रेत के धूल उड़ने लगे, सभी ओर कुहासे लोग बीमार होने लगे। इसकी आंच सिङबोङा और धरती माता तक पहुँचती है तो सिङबोङा स्वयं उनके बीच जाने की सोचते हैं। सिङबोङा तुंड़ि सुतम (तुंड़ि धागे) बंदु बयर (बंदु रस्सी) के सहारे नीचे एकासीपीड़ि और तिरासी बादी में उतरते हैं, तो देखते हैं एक खसरा लड़का हल जोत रहा है लड़के की हालत देखकर उसे पूछते हैं क्या तुम्हें कोई तकलीफ नहीं हो रही है जो दवा नहीं करा रहे हो, लड़का जवाब में कहता है तकलीफ तो हो रही है लेकिन क्या करेंगे इसे कोई ठीक नहीं कर पा रहा है। इस पर सिङबोङा कहते हैं मैं तुम्हारा घाव ठीक कर सकता हूँ लेकिन इसके बारे में किसी को मत बताना, लड़का तुरंत जवाब में नहीं बताऊँगा ठीक कर देना मैं हमेशा तुमको जोआर करूंगा कहता है।

इसके बाद सिङबोङा अपनी बारह विधि और बाईस सिद्धि करने के बाद खसरा लड़का को ठीक कर दिए और लड़के का पीड़ा अपने ऊपर ले लिए फिर आगे बढ़ गए। गाँव में जाने के बाद लुटकुम हड़म व लुटकुम बुढ़िया के घर जाकर उसे अपने पास रखने के लिए आग्रह करते हैं और बदले में उनके घर का काम करने के लिए बोलते हैं दोनों कुछ देर सोचते हैं उसके बाद उसे अपने पास रख लेते हैं, दोनों दंपति रोज दिन जलावन के लिए लकड़ी और कंदमूल लाने के लिए जंगल जाते थे इसलिए दूसरे दिन सुबह भी आँगन में धान सूखने के लिए धूप में निकालकर लड़के को देखते रहने के लिए बोलकर जंगल चले जाते हैं। उसी समय असुर लड़के उसके पास आकर अपने साथ गोली खेलने के लिए उसे विवश करते हैं तो वह राजी हो जाते हैं लेकिन बाद में पता चलता हैं की उसके पास तो असुर के लड़कों के सामान कांच के गोली नहीं हैं खसरा लड़का को मुर्गी का अंडा दिखता है तो उसे ही लेकर गोली खेलने चला जाता है असुर के लड़के यह देखकर उसके ऊपर हँसते हैं लेकिन वह चुपचाप रहता है। जब खेल शुरू होती है तो अंडे से ही सभी असुर लड़कों के गोली को मारकर तोड़ देते हैं और खेल में उनसे जीत जाते हैं। लेकिन जब घर वापस आते हैं तो सारे धान को बकरी और मुर्गी खा जाते हैं यह सब गाँव के अन्य लोग भी देखते हैं और हड़म और बुढ़िया के जंगल से वापस आने पर गाँव के लोग खसरा लड़के के बारे में सारी बातें बताते हैं यह सब सुनकर दोनों दंपति को चिंता होने लगती है कि कैसे और क्या खाएंगे। घर पहुँचने के बाद दोनों उनसे फटकारते हुए पूछते हैं क्या जो लोग बोल रहे हैं सच है धान को मुर्गी, बकरी खा गए क्या? वह उन दोनों की ओर देखते हैं और बोलते हैं हे मेरे दादा-दादी मुझे मत डांटो धान अभी भी है पहले आप दोनों देख लेना यह सुनकर दोनों जांचते हैं तो धान पहले जितना था उतना ही है यह देख दुबारा पूछते हैं क्या तुमने किसी का चोरी करके तो नहीं ले आए हो लड़का बोलता है मैं भला क्यों किसी का चोरी करूंगा। इसी तरह खसरा लड़का रोज असुर लड़कों के साथ गोली खेलने जाते और धीरे – धीरे उनके सारे राज जान गए कि किस तरह असुर लोग कोयले और लोहा बनाते हैं। एक दिन सिङबोङा अपनी बारह विधि और बाईस सिद्धि लगाई जिससे असुरों के चपुआ चलते – चलते बीच में बंद हो गई, जिसके कारण लोहे, कोयले बनने बंद हो गए। असुर लोग परेशान होने लगे कि कैसे उनका दिन – रात चलने वाला लोहा खदान अचानक से बंद हो गए उनके लाख कोशिश करने के बाद भी लोहा नहीं बना पा रहे थे इससे परेशान होकर मिलकर एक ओझा के पास जाते हैं और अपनी समस्या बताते हैं कि हमारी लोहा की खदान से न लोहा बना पा रहे और ना ही कोयला क्या समस्या है नहीं जान पा रहे हैं? ओझा चावल देखते हैं और उनको बोलते हैं की आप सब एक मुर्गी पूजा कर देना और देखना लोहा बनने लगेगा। घर वापस आकर ठीक वैसे ही करते हैं लेकिन फिर भी लोहा नहीं बना पाते हैं इस बार दूसरे ओझा के पास जाते हैं और उसे भी वही समस्या बताते हुए कारण पूछते हैं ओझा देखते हैं और बोलते हैं कि आप सब को इसे ठीक करने के लिए एक इंसान के बच्चे को आग के भट्टी में डालकर बलि देना होगा तभी ठीक हो पाएगा ओझा की बातों को सुनकर सभी असमंजस में पड़ जाते हैं कि इंसान का बच्चा कहां से लाएंगे कौन अपना बच्चा बलि देगा। घर वापस आने के बाद दूसरे दिन से बच्चा ढूंढने के लिए असुर पुरुष निकाल जाते हैं कुछ दिनों तक ढूंढने के बाद भी किसी को कोई बच्चा नहीं मिला। तभी सब एक जगह बैठकर बातें करते हैं की कैसे इस समस्या का हल निकाला

जाए और उन्हें खसरा लड़का के बारे में ख्याल आता है और सभी असुर उसी को बलि देने का फैसला करते हैं और उसके लिए दोनों दंपति लुटकुम हड़म और बुढ़िया से बात करने जाते हैं और लड़के को उनसे मांगते हैं लेकिन दोनों दंपति लड़के को देने से साफ इंकार कर देते हैं। असुरों के इस व्यवहार को देखकर गाँव के लोग गुस्सा करते हैं और असुरों का विरोध करते हैं लेकिन इनके ऊपर उनका कुछ प्रभाव नहीं पड़ता है वे लोग अपने जिद्द में आ गए थे, कि वे खसरा लड़के को ही बलि के लिए लेकर जाएंगे और इसी जिद्द में खसरा लड़के का हाथ पकड़ लेते हैं इधर लुटकुम हड़म और बुढ़िया दोनों भी लड़के के हाथ को पकड़कर अपनी ओर खींचने लगते हैं लेकिन वे दोनों असमर्थ हो जाते हैं। लड़के उनके साथ चला जाता है लेकिन उनके सामने एक शर्त रखते हैं कहते हैं कि तुम लोग मुझको बलि तो दोगे पर उससे पहले सात दिन – रात तक बारह कोठि और बाईस भट्ठियों को कोयले से भरो उसके बाद अंत में उसके ऊपर आम के पत्ते से पानी छिड़को इसके अलावे नई चपुआ, नई डंडे में सफेद बकरे के चमड़े से कुंवारी लड़कियां धौंकनी चलाए। लड़के के कहे अनुसार सभी तैयारी पूरी करने के बाद खसरा लड़का बारह कोठि बाईस भट्ठी के अंदर चल जाता है उनके जाने के बाद कुंवारी युवतियाँ चपुआ चलाने लग जाती हैं, चपुआ पूरी सात दिन सात रात धौंकतीं हैं। उसके बाद आम पत्ते से भट्ठी में पानी छिड़कते हैं पूरे सात दिन के बाद खसरा लड़का भट्ठी से बाहर निकलते हैं उनका शरीर सोने से सजी हुई है जिसे देखकर असुर लोग उनके शरीर से सोने छीनने के लिए उनकी ओर लपक पड़ते हैं लोग चिल्लाते हैं उनकी ये हरकत देखकर कहते हैं अरे लड़ो मत अंदर में बहुत है मैं तो अकेला ही था इसलिए ज्यादा नहीं लेकर आ पाया तुम सब तो ज्यादा लोग हो ज्यादा – ज्यादा ला सकते हो यह सुनते ही असुर लड़के और उनके बच्चे मैं पहले मैं पहले कहते हुए सभी लोग भट्ठी में घूस जाते हैं, जाने के बाद आग की भट्ठी के अंदर चिल्लाते हैं, रोते हैं, वे जल रहें हैं, उनकी आवाज सुनकर असुर लड़कियां खसरा लड़का से पूछतीं हैं, कि क्या हो रहा है इतना आवाज क्यों आ रहा है इसका जवाब देते हुए लड़का कहता है ये सोना लेने के लिए एक – दूसरे के ऊपर चिल्ला रहे हैं। कुछ देर बाद भट्ठी से बाहर खून बहकर निकलता है इसे देख पुन: असुर महिलाएं उनसे पूछतीं हैं ये लाल-लाल क्या है? इसके जवाब में कहते हैं कि ये लोग अंदर में पान खाकर थूक रहे हैं यह उसी का रंग है। कुछ देर तक देखते हैं लेकिन अन्दर से कुछ आवाज नहीं आने पर वे नए घड़े के पानी को आम पत्ती से भट्ठी में छिड़ककर भट्ठी की आग को कम करते हैं और भट्ठी में अंदर जाकर देखते हैं तो चारों तरफ राख और हड्डियाँ बिखरे पड़े हैं ये देख सभी रोती – बिलखतीं हैं। सिङबोङा (खसरा लड़का) वापस जाने के लिए बारह विधि और बाईस सिद्धि करते हैं, और फिर ऊपर आकाश की ओर तुंड़ि धागे और बन्दु रस्सी से जाने लगते हैं, उसी समय असुर महिलाएं उनके हाथ पैर को पकड़कर अपनी ओर खींचने लगतीं हैं, और खसरा लड़के से बोलती हैं ये आपने क्या कर दिया, हम किसके सहारे जियेंगे? क्या खाएंगे? कहते हुए सिङबोङा के शरीर में चिपकने लगतीं हैं उनके जवाब में सिङबोङा कहते हैं मैंने तुम लोगों से कहा था कि भट्ठी ज्यादा मत चलाओ धरती में पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है तुमने मेरी बात नहीं मानी इसलिए मुझे ये सब करना पड़ा। लेकिन तुम सब चिंता मत करो तुम सबका पालन-पोषण होगा ये कहते हुए उन्हें अपने से अलग करने के लिए सिङबोङा जोर से अपने शरीर को छिटकते हैं जिसके झटके से असुर महिलाएं

नीचे की ओर अलग – अलग स्थानों में कोई जंगल में, नदी, पहाड़, पोखर के बीच जा गिरे। मुंडा दर्शन में ये मत है कि इन्हें ही आज अलग-अलग नामों से जानते हैं, पहाड़ में गिरने वाली बुरु बोंङा, नदी पोखर में गिरने वाली नागे बोंङा, गहराई या गड्ढे में गिरने वाली इकिर बोंङा आदि। इनकी सेवा की जिम्मेदारी देते हुए सिङबोङा ने गाँव - गाँव में पाहन की नियुक्ति की। इसके बाद सिङबोङा आकाश में चले जाते हैं। पुन: धरती पर हरियाली आती है, और चारों तरफ खुशहाली लौटती है। कथा में मुंडा और असुर समुदाय के बीच प्रकृति को बचाने के लिए हुए संघर्ष को दर्शाती है। लोककथा में सामाजिक शिक्षा का भी माध्यम हैं। इनके माध्यम से नई पीढ़ी को प्रकृति के प्रति सम्मान, सामूहिक जीवन व नैतिक व्यवहार की शिक्षा मिलती है।

अनुष्ठान समाप्ति होने से पहले पाहन द्वारा दिए गए चावल को पूजा मंडप में गाड़े गए भेलवा डालि के ऊपर सभी उपस्थित श्रोतागण छिड़कते हैं और उसके बाद कांसे की थाली में पानी लिया जाता है और उसमें भेलवा की टहनी की पाँच छोटी टुकड़ी की जाती है और भेलवा उस टुकड़ी के साथ थोड़ी सी चावल लेकर थाली के पानी में जय सिङबोङा कहकर पाहन डाल देते हैं। चावल और भेलवा की डालि तैरते हुए आपस में जुड़ जाते हैं तो यह माना जाता है कि घर में सुख-शांति बनी रहेगी और साथ ही फसल उत्पादन के लिए भी शुभ माना जाता है। वहीं यदि चावल और भेलवा टहनी आपस में नहीं जुडते हैं तो अशुभ माना जाता है, ऐसा होने पर पाहन पुन: मंत्र जाप करते हुए वही प्रक्रिया सम्पन्न करते हैं। उसके बाद रानु को पानी में भिंगाकर तीन सखुआ के पत्ते रख सिङबोङा को अर्पित करते हैं फिर धान के पौधे और अरवा चावल को सूप में लेकर घर की महिला के हाथों में यह कहते हुए देते हैं कि मैं सूतिआबे कुड़अम्बे से फलना (व्यक्ति का नाम) के घर आया हूँ क्या उसका घर यही है? जवाब में महिला हां उसी का घर है कहते हुए सूप को ग्रहण करतीं हैं, और फिर पाहन पानी से भरे कांसे की थाली को घर के पुरुष को देते हैं पुरुष घर के छत्त में पानी को डालते हैं और छत्त से गिर रहे पानी को थाली में झोंकर आदिन ओड़ा: में ले जाकर पानी को जमीन में अपने पूर्वजों का नाम लेकर गिरते हैं। लोटे के पानी से आम पत्ते से पूरे घर में छिड़कर पाहन पूजा अनुष्ठान समाप्त करते हैं। अंत में चौका में रखे अंडे को घर के छोटे लड़के बच्चे को दे देते हैं लड़के लेकर सखुआ के पत्ते में अंडा को पकाकर खा जाता है। इसे लड़की बच्चियों को खाना वर्जित है।

आदिङ ओड़ा: में पूजा: पाहन द्वारा पूजा अनुष्ठान सम्पन्न होने के बाद घर के मुख्य नई मिट्‌टी के वर्तन में बने चावल और गोटा ऊरद दाल को सामूहिक भोज से पहले सिङबोंङा के साथ-साथ अपने पूर्वजों, पुरखों को आदिङ ओड़ा: में अर्पित करते हैं। उसके बाद समुदाय के सभी लोगों को भोजन कराया जाता है।

दूसरे दिन सुबह सभी टहनियों को खेत में ले जाकर इस विश्वास में गाड़ा जाता है कि ये भेलवा, सखुआ और केंदु की डालि फसल को रोग और कीड़े-मकोड़ों से बचाकर रखेगा।

वर्तमान समय में विश्व स्तर पर पर्यावरण संतुलन एक बहुत बड़ी समस्या बन गया है इसको लेकर पूरे विश्व के बड़े बुद्धिजीवि, नेता से लेकर वैज्ञानिक तक चिंतित हैं दिन-ब-दिन भूमंडलीय ताप में वृद्धि हो रही है कहीं भी जल प्रलय, भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट, अम्लीय वर्षा हो रही है। मानव इन सारी घटनाओं से वाकिफ होने के बाद भी प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ करने में झिझक नहीं रहा है। सृष्टि की सबसे श्रेष्ठ रचनाओं में मानव की रचना है इसका ये मतलब नहीं कि मानव जो सोचेगा जैसे चाहेगा वही सही है मानव को प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ व खिलवाड़ करने का अधिकार नहीं है, हम प्रकृति की एक रचना हैं इसलिए विकास के बारे में सोचने से पहले प्रकृति की विकास व संरक्षण के बारे में भी विचार – विमर्श करनी चाहिए। प्रकृति के सामने मानव एक छोटी सूक्ष्म जीव बराबर है इसलिए मानव को हमेशा प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और आदर का भाव होना चाहिए।

पुराने रुढ़ि परंपरा के अनुसार मुंडाओं के सामाजिक – सांस्कृतिक व धार्मिक पूजा अनुष्ठान में परिवर्तन के सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव के कई कारक हैं जिसमें एक है पशु बलि, तपन अर्पित करना महिलाओं को कई स्थलों में जाने व पूजा करने से वर्जित करना शामिल है जैसे: सरना स्थल (जायर, जहेरथान) और दिबिगुड़ी (ग्राम पूजा स्थल) में पूजा के समय महिलाएं शामिल नहीं हो सकती हैं, और ना ही वहाँ का कोई भी प्रसाद ग्रहण कर सकती हैं। जिसके कारण महिलाएं अपनी आध्यात्मिक पीड़ा किसी के सामने रख नहीं पाती हैं और आध्यात्मिक सुख की तलाश में अन्य धर्म की ओर बढ़ती हैं। मुंडाओं में धर्मांतरण व सांस्कृतिकरण बढ़ने का एक कारण ये भी है। इसलिए समय के साथ समाज में बदलाव बहुत जरूरी होती है। मुंडा समाज के बुद्धिजीवि वर्ग को आभास होने के बाद महिलाओं को पूजा-पाठ में जगह देने के लिए अपने पुराने रुढ़ि धार्मिक परंपरा को भी बरकरार रखते हुए उसमें बदलाव किया जा रहा है। इसका प्रमाण बालो गाँव में पारंपरिक सरना स्थल से अलग दूसरी जगह पर एक नया सरना स्थल है। जहां गाँव की सभी महिला-पुरुष, बच्चे, युवक-युवती, बुजुर्ग सभी एक साथ एकत्रित होकर पूजा-पाठ करते हैं। साथ ही सोसो बोङा (भेलवा पूजन) के समय तपन के बदले रानु अर्पित करना, इसके अलावे जिस घर में सोसो बोङा अनुष्ठान होती है वहाँ पहले ज्यादातर पुरुष ही शामिल होते थे लेकिन अब महिलाएं और बच्चे भी पूजा में शामिल होते हैं और सिङबोङा अर्जी गीत साथ में गाते हैं इसके बाद सृष्टि कथा और असुर कथा पाहन से सुनते हैं। अध्ययन में पाया कि यहाँ सोसो बोंङा अनुष्ठान के समय तपन, और बलि नहीं चढ़ाया जाता है।

आधुनिकता, शहरीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव से आदिवासी धार्मिक परंपराओं में परिवर्तन देखा जा रहा है। नई पीढ़ी का एक भाग पारंपरिक विश्वासों से दूर होता जा रहा है। इसके बावजूद सोसो बोंङा आज भी सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण आधार बना हुआ है। शहरीकरण व आधुनिकीकरण प्रभाव के कारण लोग पूजा अनुष्ठान छोड़ते जा रहे हैं बच्चे अपनी पढ़ाई, स्वस्थ सुविधा, रोजगार के लिए शहरों की ओर रुख कर रहे हैं। जिनकी सरकारी/गैर सरकारी नौकरी मिल जाती है वे वापस गाँव की ओर जाना नहीं चाहते हैं। शहरों में ही जमीन या घर खरीद कर वहीं बस जाते हैं वैसे बहुत कम लोग ही हैं जो गाँव और अपनी संस्कृति को नहीं छोड़ते हैं।

निष्कर्ष (Conclusion) : सोसो बोंङा मुंडा सरना धर्म की केन्द्रीय अवधारणा है, जो प्रकृति, कृषि, समाज और संस्कृति के बीच गहरे संबंध को व्यक्त करता है। यह केवल अलौकिक शक्ति का प्रतीक नहीं, बल्कि सामुदायिक एकता, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक निरंतरता का आधार है। आदिवासी दर्शन प्रकृति से जुड़ी हुई है मुंडा आदिवासी दर्शन को जानने और समझने के लिए उनकी प्रचलित पौराणिक कथा, मौखिक, अलिखित व लिखित लोककथा, दंतकथा के अध्ययन से पता चलता है कि उनकी जीवन शैली प्रकृति से कितनी गहराई से जुड़ी हुई है। मनुष्य की आदि और अंत प्रकृति ही तय करती है जंगल मानव सभ्यता के विकास के लिए बड़ा महत्व रखता है। आदिवासियों के लिए वन उनकी आत्मा है। जहां वन और प्रकृति की बात आती है वहाँ आदिवासियों की बात आ ही जाती है। पहले भी आदिवासी पर्यावरण सुरक्षा के लिए कई लड़ाई लड़े हैं और आज भी लड़ रहे हैं।

वर्तमान अध्ययन से यह पता चलता है कि अपनी परंपरा को जीवित रखने के लिए समय के साथ रुढ़ि परम्पराओं को भी ध्यान में रखते हुए उनमें बदलाव करते हुए जीवित रखा जा सकता है। परिवर्तन समाज को देखने का एक दर्पण है। बस परिवर्तन के समय ध्यान रहे कि वह समाज के कल्याण में हो। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि वर्तमान समय में मुंडा आदिवासी सरना धर्म की धार्मिक आस्था व अनुष्ठान जो मौखिक व लिखित दोनों परंपरा का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन भावी समाज को एक नई दिशा व विश्व दृष्टिकोण दे सकती है।

संदर्भ सूची (Refrence List) :

हॉफमैन, जॉन बैप्टिस्ट (1941) “एनसाइक्लोपीडिया मुण्डारिका” volum xiii Patna: Government Printing, Bihar and orisha,

सिंह कुमार सुरेश (1978) The Munda World, New Delhi: Anthropological Survey of India

मुंडा राम दयाल एवं मानकी सिंह रतन (2015) “सोसो बोंङा” कलकत्ता, आदिवाणी एवं रांची रुम्बुल

मुंडा राम दयाल एवं मानकी सिंह रतन (2009) “आदि धर्म” राजकमल प्रकाशन न्यू दिल्ली

रॉय एस. सी. (1912) “The Mundas And Their Country” सिटी बुक सोसाइटी, कलकत्ता

विद्यार्थी एल. पी. एवं राय कुमार बिनय (1977) “द ट्राइबल कल्चर ऑफ इंडिया” कांसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी दिल्ली